ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २०१ -

ॐ सन्धात्रे नमः

सन्धि करवाने वाले प्रभु को नमन।

I salute the one who is the Co-Relator.

कर्मफलैः पुरुषान् सन्धत्ते इति सन्धाता अर्थात् मनुष्यों को कर्मों के फलों से संयुक्त करते हैं, इसलिए वे सन्धाता हैं। मनुष्य कर्म करता है, किन्तु उसका फल उसे कालान्तर में प्राप्त होता है। कर्मफल की प्राप्ति में कोई अव्यवस्था भी नहीं होती है कि कर्म किसी और ने किया और फल किसी और को प्राप्त हो। परमात्मा ही इस प्रकार सुव्यवस्थित रूप से कर्ता को ही फल के साथ संयुक्त करते हैं। इसलिए वे सन्धाता कहलाते हैं।

उन सन्धाता रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २०२ –

ॐ सन्धिमते नमः

भोक्तारूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Enjoyer.

फलभोक्ता च स एव इति सन्धिमान् अर्थात् फलों के भोगनेवाले भी वे ही हैं, इसलिए सन्धिमान् हैं। सब के हृदय में चेतन स्वरूप परमात्मा प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। जब अज्ञानवशात् यह प्रतिबिम्बित चेतना शरीरादि उपाधि से तादात्म्य करती है, तो वह ही जीवरूप से कर्ता–भोक्ता की तरह से अनुभव में आती है। अर्थात् जीवरूप से वे ही परमात्मा अभिव्यक्त होकर मानों कर्मफल का भोग भी कर रहे हैं।

उन कर्मफलभोक्ता रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २०३ -

ॐ स्थिराय नमः

सदा एकरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Consistent.

सदैकरूपत्वात् स्थिरः अर्थात् सदा एकरूप होने के कारण स्थिर हैं। परमात्मा ही अपनी मायाशक्ति के द्वारा जीव, जगत् और जगत के संचालक ईश्वर के रूप से होते हैं, किन्तु यह प्रतीति मात्र ही है। वे अपने वास्तविक - ब्रह्मस्वरूपता से कभी भी च्युत नहीं होते हैं, किन्तु सदा एक अखण्ड सत्तारूप ही रहते हैं। इसलिए वे स्थिर कहलाते हैं।

उन सदा एकरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २०४ -

ॐ अजाय नमः

भक्त के हृदय में प्रविष्ट परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who enters in the Heart of Devotee & throw away negativities.

अजति गच्छति क्षिपति इति वा अजः अर्थात् भक्तों के हृदय में जाकर असुरों को फेंकते हैं, इसलिए अज हैं। जिनका हृदय भक्तिसभर होता है, भगवान उन भक्त के हृदय में प्रवेश करते हैं। भगवान स्वयं भक्त के हृदय में भक्ति की तरह प्रवेश करके आसुरी वृत्तियों को बाहर फेंकते हैं। इसलिए अज कहलाते हैं।

उन भक्तों के अनुग्राहक अज रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २०५ -

ॐ दुर्मर्षणाय नमः

असुरों के द्वारा असहनीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is unbearable to evil ones

मर्षितुं सोढुं दानव आदिभिः न शक्यते इति दुर्मर्षणः अर्थात् दानवादिकों से मर्षण अर्थात् सहन नहीं किये जा सकते, इसलिए भगवान् दुर्मर्षण हैं। अहंकार और स्वार्थ से युक्त दानव भगवान की सन्निधि को सह नहीं पाते है, क्योंकि प्रभु की महिमा के सामने अपने छोटेपन से युक्त अहंकार की संतुष्टि नहीं हो पाती है। अतः असुरक्षा की चिन्ता से ही भगवान की सन्निधि असहनीय हो जाती है। अतः परमात्मा दुर्मर्षण कहलाते हैं।

उन दुर्मर्षण रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २०६ -

ॐ शास्त्रे नमः

अनुशासन करनेवाले प्रभु को नमन।

I salute the one who is the Controller of all.

श्रुतिस्मृति आदिभिः सर्वेषां अनुशिष्टिं करोति इति शास्ता अर्थात् श्रुति-स्मृति आदि से सब का अनुशासन करते हैं, इसलिए शास्ता हैं। परमात्मा ने शास्त्र के द्वारा जो ज्ञान प्रदान किया हैं, उससे मनुष्य धर्म के पथ पर चलते हुए सृष्टि के लिए व्यवधान नहीं बनते हुए अपने समस्त पुरुषार्थ की सिद्धि कर लेता हैं, तथा अन्य के लिए भी कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। इस प्रकार श्रुति आदि के माध्यम से परमात्मा सब का अनुशासन करते हैं। उन शास्ता रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २०७ –

ॐ विश्रुतात्मने नमः

सत्यादि लक्षणरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Celebrity of the Vedas.

विशेषेण श्रुतो येन सत्यज्ञानादिलक्षणः आत्मा अतः विश्रुतात्मा अर्थात् भगवान का सत्यज्ञानादि रूप आत्मा की तरह से विशेषरूप से श्रवण किया जाता है, अतः वे विश्रुतात्मा हैं। परमात्मा वाणी और मन से परे हैं। अतः शब्द के द्वारा उनकी व्याख्या तथा वर्णन नहीं किया जा सकता है। सद्गुरु ही शास्त्र प्रमाण से सत्य, ज्ञान आदि लक्षणा के द्वारा परमात्मा का ज्ञान देते हैं।

उन वेदान्त श्रवण से जानने योग्य परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २०८ -

ॐ सुरारिघ्ने नमः

देवता के शत्रुओं के विनाशक को नमन।

I salute the one who the Destroyer of Asuras.

सुरारीणां निहन्तृत्वात् सुरारिहा अर्थात् देवताओं के शत्रुओं को मारनेवाले होने के कारण भगवान् सुरारिहा हैं। देवतागण धर्ममार्ग का अनुसरण करते हुए सृष्टि के संचालन में अपना अद्भुत योगदान देते हैं। अतः भगवान सृष्टि पर धर्म को टिकाए रखकर उनकी रक्षा हेतु दृढ़ संकल्प है। देवताओं के कार्य में विघ्न उत्पन्न करनेवाले असुरों को परमात्मा दण्डित करते हैं।

उन देवता के शत्रुओं के हन्ता प्रभु को नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २०९ -

ॐ गुरवे नमः

गुरु स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Teacher.

सर्वविद्यानाम् उपदेष्टृत्वात् गुरुः अर्थात् सब विद्याओं के उपदेष्टा होने से गुरु हैं। जिन विद्या को पाकर अभ्युदय और मोक्ष की सिद्धि होती है, उस ज्ञान की अनादि काल से चलती आ रही परम्परा के अन्तर्गत जो भी इस ज्ञान से अज्ञान रूपी अन्धकार को नष्ट करते हैं, वे ज्ञान के उपदेष्टा गुरु रूप से स्वयं परमात्मा ही प्रकट हैं। इस प्रकार इस परम्परा के प्रतिनिधि रूप हमारे गुरु स्वयं परमात्मा ही हैं।

उन गुरु रूप से प्रकट परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २१० -

ॐ गुरुतमाय नमः

सब से महान गुरुस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Greatest Teacher.

विरिंचि आदीनामपि ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकत्वाद् गुरुतमः अर्थात् ब्रह्मा आदि को भी ब्रह्मविद्या प्रदान करनेवाले होने से गुरुतम हैं। सभी लौकिक और पारलौकिक अथवा परा और अपराविद्या का मूल स्रोत वेदशास्त्र हैं। सृष्टि के समय स्वयं परमात्मा के श्वास की तरह वेदशास्त्र प्रकट हुए है। प्रथमज ब्रह्माजी जिससे यह ब्रह्मविद्या की परम्परा चलती आ रही है, वे स्वयं भी इस परम्परा से ही प्राप्त ज्ञान से युक्त हैं। इस प्रकार परमात्मा स्वयं ही समस्त ज्ञान के उपदेष्टा आदिगुरु की तरह विराजमान हैं।

उन आदि गुरु स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २११ –

ॐ धाम्ने नमः

ज्योति स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Conciousness.

धाम ज्योतिः 'नारायणपरो ज्योतिः' इति मन्त्र–वर्णात् अर्थात् धाम ज्योति को कहते हैं, श्रुति में 'नारायण परम ज्योति हैं' इस प्रकार से कहा गया है। ज्योति वह होती है, जिनसे अन्य ज्योतियां प्रज्जवलित होती हैं तथा जिससे अन्य सब प्रकाशित होता है। इस चेतना से समस्त ज्योतिस्वरूप सूर्य, चन्द्र, अग्नि आदि देदीप्यमान पदार्थ प्रकाशित होते हैं। इसलिए परमात्मा को ज्योतिस्वरूप कहा जाता है।

उन ज्योतिस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २१२ –

ॐ सत्याय नमः

सत्यस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Truth.

सत्यवचनधर्मरूपत्वात् सत्यः अर्थात् सत्यभाषण स्वरूप होने से भगवान् सत्य हैं। धर्माचरण का महत्वपूर्ण पहेलू सत्य का भाषण होता है। सत्यभाषण के माध्यम से ही जगत में धर्म टिका रहता है। भगवान् स्वयं धर्म –संस्थापना हेतु अवतरित होते हैं। अतः धर्म संस्थापक भगवान् के द्वारा भी सत्यभाषण सहज रूप से होता है। इतना ही नहीं, किन्तु परमात्मा स्वयं भी सत्यस्वरूप, समस्त काल से परे हैं।

उन सत्यस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २१३ –

ॐ सत्यपराक्रमाय नमः

सत्य पराक्रम वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is One of unfailing valour.

सत्यः अवितथः पराक्रमः यस्य स सत्यपराक्रमः अर्थात् जिनका पराक्रम सत्य अर्थात् अमोघ है, वे भगवान् सत्यपराक्रम हैं। परमात्मा धर्म की स्थापना हेतु स्वयं अवतरित होते हैं, और अधर्म के प्रवर्तक असुरों का विनाश करते हैं। असुरों के विनाश हेतु वे अपने अतुलनीय पराक्रम से युक्त होते हैं। जो कभी भी व्यर्थ अथवा विफल नहीं होता है। इस प्रकार वे अमोघ पराक्रमी हैं।

उन सत्य पराक्रमी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २१४ -

ॐ निमिषाय नमः

योगनिद्रारत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One whose eye-lids are closed in Yoga-nidra.

निमीलिते यतो नेत्रे योग निद्रारतस्य अतः निमिषः अर्थात् योगनिद्रारत भगवान् के नेत्र मुंदे हुए हैं, इसलिए वे निमिष हैं। मुंदे हुए नेत्र अन्तर्मुखता अथात् योगनिद्रा को दिखाता है। परमात्मा के नेत्र मुंदे हुए है, अर्थात् जगत की उत्पत्ति, स्थिति या लय हो, वे सदैव अपनी ब्रह्मस्वरूपता के प्रति सचेत हैं। इस प्रकार वे योगनिद्रा में रत हैं।

उन योगनिद्रारत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २१५ –

ॐ अनिमिषाय नमः

नित्य प्रबुद्ध परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is ever awake.

नित्यप्रबुद्धस्वरूपत्वात् अनिमिषः अर्थात् नित्य–प्रबुद्ध स्वरूप होने के कारण अनिमिष हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके जगत की उत्पत्ति आदि भी करने पर भी नित्य ब्रह्मस्वरूपता में स्थित हैं। उत्पत्ति आदि कर्म, तथा जीवों के कर्मफलदाता होना आदि समस्त कर्म से भी असंग, निर्विकार, अपनी पूर्णस्वरूपता से अभिज्ञ हैं।

उन नित्य प्रबुद्ध स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २१६ -

ॐ स्रग्विणे नमः

वैजयन्ती मालाधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has the Vaijayanti necklace.

भूततन्मात्ररूपां वैजयन्त्याख्यां स्रजं नित्यं बिभर्ति इति स्रग्वी अर्थात् सर्वदा भूत तन्मात्ररूप वैजयन्तीमाला धारण करते हैं, इसलिए स्रग्वी हैं। जिस प्रकार माला में विविध पुष्पों अथवा मणियों को एक सूत्र पिरोता है, किन्तु वह दृष्ट नहीं होता है। उसी प्रकार परमात्मा अदृष्ट रूप से इस पंचीकृत एवं अपंचीकृत पंचमहाभूतों से निर्मित विविध नामरूपात्मक जगत रूपी मोतियों को पिरोये हुए हैं। इसी सूत्रस्थानीय परमात्मा की वजह से ही समस्त जगत टिका हुआ है।

उन वैजयन्ती मालाधारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २१७ -

ॐ वाचस्पतये उदारधिये नमः

विद्यापति रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Omniscient & Magnanimous God

वाचो विद्यायाः पतिः वाचस्पतिः; सर्वार्थविषया धीः बुद्धिः अस्य इति उदारधीः। भगवान की बुद्धि सर्व पदार्थो को प्रत्यक्ष करनेवाली है, इसलिए वे उदारधी हैं, इस प्रकार परमात्मा वाचस्पतिरुदारधी हैं। परमात्मा जगत का उसके आदि कारण का, तथा उसके तत्त्व को जाननेवाले, स्वयं तत्त्वस्वरूप हैं। वेद उन्हीं परमात्मा की वाणी हैं, जो समस्त वाणियों में श्रेष्ठ है। ऐसे समस्त ज्ञान से युक्त, तथा वेदवाणी के द्वारा उसे प्रदान करनेवाले परमात्मा विद्यापति, ज्ञाननिधि हैं।

उन सर्वज्ञ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २१८ –

ॐ अग्रण्ये नमः

भक्तों को मुक्त कर देनेवाले प्रभु को नमन।

I salute the one who leads all devotees to moksha.

अग्रं प्रकृष्टं पदं नयति मुमुक्षून इति अग्रणीः अर्थात् मुमुक्षुओं को अग्र अर्थात् उत्तम पद पर ले जाते हैं, इसलिए अग्रणी हैं। परमात्मा स्वयं अवतरित होकर ज्ञान से परिपूर्ण, धर्ममय जीवन जी कर अन्य के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं। जिससे मुमुक्षु भी धर्ममय आचरण करके अपने मन को सात्विक बना सके। ऐसे मुमुक्षु के समक्ष गुरु के रूप में प्रकट होकर वे ही तत्त्वज्ञान प्रदान करके मोक्ष रूप परं पद की प्राप्ति करवाते हैं।

उन अग्रणी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २१९ -

ॐ ग्रामण्ये नमः

भूतग्राम के नेतारूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute One who has the command over all.

भूतग्रामस्य नेतृत्वाद् ग्रामणीः अर्थात् भूतग्राम का नेतृत्व करने के कारण ग्रामणी हैं। समस्त प्राणी जगत परमात्मा के संकल्प से ही होता है, तथा वे अपने संकल्प से उनकी स्थिति और प्रलय करते हैं। उनके पालन हेतु वे ही कर्मफल प्रदान करते हैं। इस प्रकार वे ही समस्त जीवों का नेतृत्व करते हैं। इसलिए वे ग्रामणी कहे जाते हैं।

उन ग्रामणी रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २२० -

ॐ श्रीमते नमः

महान् कान्ति से युक्त प्रभु को नमन।

I salute the most resplendent one.

श्रीः कान्तिः सर्वातिशायिनि अस्य इति श्रीमान् अर्थात् भगवान् की श्री अर्थात् कान्ति सबसे बढ़कर है, इसलिए वे श्रीमान् हैं। परमात्मा में समस्त प्रकार के ऐश्वर्य पूर्णमात्रा में निहित है। वे ही समस्त ऐश्वर्य के मूल स्रोत हैं। इससे वे महान् कान्तियुक्त होते हैं। अतः वे श्रीमान् हैं।

उन श्रीमान् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २२१ –

ॐ न्यायाय नमः

प्रमाण रूपा प्रभु को नमन।

I salute the one who is Valid Knowledge.

प्रमाणानुग्राहकः अभेदकारका: तर्को न्यायः अर्थात् प्रमाणों का आश्रयभूत अभेदबोधक तर्क न्याय कहलाता है, इसलिए भगवान् का नाम न्याय है। समस्त भेदरहित परमात्मा के ज्ञान हेतु शास्त्र ही प्रमाण हैं। शास्त्र ज्ञान की प्राप्ति में समस्त बाधाओं को शान्त करने हेतु शास्त्रसम्मत तर्क का आश्रय लिया जाता है। ऐसा न्याय, अप्रमेय परमात्मा का साक्षात्कार करा देने हेतु निश्चित रूप से परमात्मा की विभूति है।

उस 'प्रामाणिक–ज्ञान' रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २२२ –

ॐ नेत्रे नमः

जगत को चलानेवाले को नमस्कार।

I salute the one who rules this world.

जगत् यन्त्रनिर्वाहको नेता अर्थात् जगत् रूप यन्त्र को चलानेवाले होने से नेता हैं। कोई भी यंत्र अपने आप चलता नहीं है। उसके पीछे किसी न किसी शक्ति की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार यह जड़ जगत रूप यंत्र भी यहां सतत क्रियाशील दिख रहा है, तथा उसमें सतत विकार भी हो रहे हैं। यह सब परमात्मा की ही सन्निधि मात्र से चल रहा है। जगत रूप यंत्र को चलानेवाले स्वयं परमात्मा ही हैं।

उन जगत–स्वामी रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २२३ –

ॐ समीरणाय नमः

सांसों को चलाने वाले परमात्मा को नमन।

I salute One who keeps us breathing.

श्वसनरूपेण भूतानि चेष्टयति इति समीरणः अर्थात् श्वासरूप से प्राणियों से चेष्टा कराते हैं, इसलिए समीरण हैं। सभी प्राणियों के शरीर में भोजन पचाना, श्वासोच्छवास करना आदि सब क्रियाएं पांच प्राण के द्वारा होती है। इसकी वजह से जड़ शरीर उर्जान्वित होकर कार्य करने में सक्षम हो पाता है। यह प्राण स्वतः जड़ होते हुए भी परमात्मा की सन्निधि मात्र से जीवित होकर कार्य करने में सक्षम होते है।

सबकी सांसों को सतत चलाने वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २२४ -

ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः

सहस्र मस्तकवाले परमात्मा को नमन।

I salute the One who is with innumerable heads.

सहस्राणि मूर्धानो अस्य इति सहस्रमूर्धा अर्थात् भगवान् के सहस्रमूर्धा (मस्तक) हैं, इसलिए वे सहस्र मूर्धा हैं। परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति से जगत की तरह विविध रूपों में अभिव्यक्त हुए हैं। जगत में जो कुछ भी है, परमात्मा उन सबकी आत्मा हैं। अतः सभी शरीर तथा उनके मस्तक परमात्मा के ही होने की वजह से उन्हें सहस्रमूर्धा कहा जाता है।

उन सहस्र मस्तकवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २२५ –

ॐ विश्वात्मने नमः

विश्वात्मा रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the soul of the universe.

विश्वस्य आत्मा विश्वात्मा अर्थात् विश्व की आत्मा होने से वे विश्वात्मा हैं। जिस प्रकार समस्त लहरें जल की अभिव्यक्तियां हैं, अर्थात जल समस्त लहरों की आत्मा है। उसी प्रकार समस्त विश्व परमात्मा की मायाशक्ति के द्वारा प्रस्तुति है। परमात्मा की वजह से समस्त विश्व का अस्तित्व है। अतः परमात्मा ही समस्त विश्व की आत्मा हैं।

उन विश्वात्मा रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २२६ -

ॐ सहस्राक्षाय नमः

सहस्र नेत्रवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is with innumerable eyes.

सहस्राणि अक्षीणि अक्षाणि वा यस्य सः सहस्राक्षः अर्थात् जिनकी सहस्र आंखें अथवा इन्द्रियां हैं, वे भगवान् सहस्राक्ष हैं। परमात्मा जगत की तरह से विविध रूपों में अभिव्यक्त हुए हैं। जगत में जो कुछ भी है, वह परमात्मा ही के रूप हैं। अतः सभी की आंखें परमात्मा की ही हैं। अतः परमात्मा सहस्राक्ष हैं, जो हम सब पर सदैव कृपा दृष्टि बनाए रखते हैं, और जिनसे किसी के भी पाप-पुण्य कभी भी छुपते नहीं हैं। उन सहस्र नेत्रवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २२७ -

ॐ सहस्रपदे नमः

सहस्र चरणवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is with innumerable legs.

सहस्राणि पादा अस्य इति सहस्रपाद् अर्थात् भगवान् के सहस्र पाद हैं, इसलिए वे सहस्रपात् हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके जगत की तरह विविध रूपों में अभिव्यक्त हुए हैं। जगत में जो कुछ भी है, वह परमात्मा ही है। अतः सभी शरीर तथा उनकी चलन आदि कर्म करनेवाली पाद इन्द्रियां भी परमात्मा की ही है। अतः वे सहस्रपद हैं।

उन सहस्र चरणवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २२८ –

ॐ आवर्तनाय नमः

आवर्तन रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who whirls the wheel of Samsara.

आवर्तयितुं संसारचक्रं शीलम् अस्य इति आवर्तनः अर्थात् संसारचक्र का आवर्तन करना भगवान् का स्वभाव है, इसलिए वे आवर्तन हैं। सृष्टि बीज रूप अव्यक्त से उत्पन्न होती है, तथा प्रलय के समय बीज रूप अव्यक्त में चली जाती है। इस प्रकार जीवों के कर्मफल और वासना भोग हेतु व्यक्त से अव्यक्त तथा अव्यक्त से व्यक्त रूपी यह क्रम सतत चलता रहता है। उसे चलानेवाले स्वयं भगवान् हैं, जो अपनी मायाशक्ति से उसे संचालित करते हैं।

उन सृष्टि का आवर्तन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २२९ –

ॐ निवृत्तात्मने नमः

मुक्तस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is everfree.

संसारबन्धनात् निवृत्त आत्मा स्वरूपम् अस्य इति निवृत्तात्मा अर्थात् उनकी आत्मा संसारबन्धन से निवृत्त है, इसलिए वे निवृत्तात्मा हैं। अज्ञानवशात् स्वयं को छोटा जीव मानकर, तथा दृश्य जगत को सत्य मानकर उससे ही अपनी अपूर्णता की निवृत्ति हेतु प्रेरित होना संसार है। परमात्मा स्वयं ज्ञानस्वरूप हैं, उनमें अज्ञान तथा तज्जनित संसार का नामोनिशान नहीं है।

उन मुक्तस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २३० -

ॐ संवृताय नमः

अविद्या से आवृत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is covered by ignorance.

आच्छादिकया अविद्यया संवृतत्वात् संवृतः अर्थात् आच्छादन करनेवाली अविद्या से ढ़के हुए होने के कारण संवृत हैं। जीव स्वयं परमात्मस्वरूप होते हुए भी अज्ञानवशात् अपने आप को छोटा सा जीव समझता हुआ जन्म-मरणरूप संसार को प्राप्त होता है। सामान्यतः परमात्मा प्रत्येक जीव के लिए तब तक आवृत्त रहते हैं, जब तक उसके पुण्यों के परिपाकवशात् किसी ज्ञानवान की शरण नहीं प्राप्त होती है।

उन जीवरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २३१ -

ॐ सम्प्रमर्दनाय नमः

सबका मर्दन करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who Prosecutes all.

सम्यक् प्रमर्दयति इति रुद्र कालाद्याभिः विभूतिभिः इति सम्प्रमर्दनः अर्थात् भगवान् अपनी रुद्र और काल आदि विभूतियों से सबका सब ओर से मर्दन करते हैं, इसलिए सम्प्रमर्दन हैं। सृष्टि के संचालन तथा सन्तुलन बनाए रखने हेतु विनाश भी परं आवश्यक है। इस विनाश में भी सृजन का बीज निहित होता है। परमात्मा स्वयं काल तथा रुद्र रूप से सब का विनाश करते हैं। अतः परमात्मा सम्प्रमर्दन कहलाते हैं।

उन सबके विनाशक कालस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २३२ -

ॐ अह:संवर्तकाय नमः

सूर्यरूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Sun.

सम्यक् अह्नां प्रवर्तनात् सूर्यः अह:संवर्तकः अर्थात् सम्यक् रूप से दिन के प्रवर्तक होने के कारण सूर्य भगवान् अह:संवर्तक हैं। सूर्यदेवता परमात्मा की प्रत्यक्ष विभूति हैं। सूर्य की वजह से दिन और रात्रि होते है, इस प्रकार उन्हींकी वजह से काल का चक्र चल रहा है। इस प्रकार दिन के प्रवर्तक रूप सूर्यदेवता स्वयं परमात्मस्वरूप ही हैं।

उन सूर्यरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २३३ -

ॐ वह्नये नमः

अग्नि स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is in the form of Fire.

हविः वहनात् वह्निः अर्थात् हवि का वहन करने के कारण अग्नि वह्नि है। यज्ञ में प्रज्ज्वलि अग्नि को वह्नि कहा जाता है। यजमान के द्वारा यज्ञ में आहुति देने पर अग्निदेवता ही उस हवि का वहन करके स्वर्गादि लोक में ले जाती हैं। इस प्रकार अग्निदेवता हवि का वहन करके यज्ञकर्ता को उनके इष्टलोक की प्राप्ति कराती हैं।

उन हवि का वहन करनेवाली अग्निरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २३४ –

ॐ अनिलाय नमः

वायु रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Vital Air.

अनिलयः अनिलः, अनादित्वाद् अर्थात् कोई निश्चित निवासस्थान न होने के कारण भगवान् अनिल हैं अथवा अनादि होने से अनिल हैं। जो सर्वव्यापी हैं, उनका कोई एक निवासस्थान नहीं होता। परमात्मा अनिल अर्थात् वायु की तरह देशतः सर्वव्यापी हैं, तथा काल की दृष्टि से भी सर्वव्यापी अर्थात् सभी कालों में स्थित हैं, क्योंकि उनका कोई आदि अर्थात् जन्म नहीं है।

उन वायु की तरह सर्वव्यापी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २३५ –

ॐ धरणीधराय नमः

पृथ्वी को धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who supports the Earth.

शेषदिग्गजादिरूपेण वराहरूपेण च धरणीं धत्त इति धरणीधरः अर्थात् शेष और दिग्गजादि रूप से अथवा वराहरूप से पृथ्वी को धारण करते हैं, इसलिए परमात्मा धरणीधर हैं। पुराण के अनुसार पृथ्वी सहस्र फनधारी शेषनाग के शीश पर टिकी हुई है। इसके अलावा पुराण के प्रसंग के अनुसार पृथ्वी जब पाताल में धसने लगी तब भगवान विष्णु ने स्वयं वराह अवतार लेकर अपने शीश पर धारण करके पृथ्वी का उद्धार किया था। उन धरणीधर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २३६ -

ॐ सुप्रसादाय नमः

ज्योति स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Conciousness.

धाम ज्योतिः 'नारायणपरो ज्योतिः' इति मन्त्रवण ार्तात् अर्थात् धाम ज्योति को कहते हैं, श्रुति में 'नारायण परम ज्योति हैं' इस प्रकार से कहा गया है। ज्योति वह होती है, जिनसे अन्य ज्योतियों को प्रज्जवलित किया जा सकता हैं तथा जिससे अन्य सब प्रकाशित होता है। चेतना से समस्त ज्योति स्वरूप सूर्य, चन्द्र, अग्नि आदि देदीप्यमान पदार्थ प्रकाशित होते हैं। इसलिए परमात्मा को ज्योतिस्वरूप कहा जाता है।

उन ज्योतिस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २३७ -

ॐ प्रसन्नात्मने नमः

प्रसन्न स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is ever blissful by nature.

रजस्तमोभ्याम् अकलुषित आत्मा अन्तःकरणम् अस्य इति प्रसन्नात्मा अर्थात् भगवान् का अन्तःकरण रज और तम से दूषित नहीं है, इसलिए वे प्रसन्नात्मा हैं। तमोगुण अज्ञान का सूचक है, तथा रजोगुण उससे उत्पन्न मलिनता का सूचक है। जहां अज्ञान और उससे उत्पन्न मलिनता होती है, वहां अशान्ति और विक्षेप होना स्वाभाविक है। परमात्मा स्वयं मायापति होने की वजह से वे अज्ञानरूप तमोगुण तथा विक्षेपरूप रजोगुण के दोष से मुक्त हैं। अतः वे प्रसन्नात्मा हैं।

उन प्रसन्नात्मा रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २३८ -

ॐ विश्वधृते नमः

विश्व को धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Supporter of the World.

विश्वं धृष्णोति इति विश्वधृक् अर्थात् भगवान विश्व को धारण करते हैं, इसलिए वे विश्वधृक् हैं। परमात्मा ही अपनी सत् स्वरूपता के द्वारा समस्त विश्व को अस्तित्व प्रदान करते हैं और अपनी चेतनस्वरूपता के द्वारा उसे जीवन्तता प्रदान करते हैं। एवं अपनी आनन्दस्वरूपता के कारण सबमें प्रेम और आत्मीयता बनाते हैं। इस प्रकार पूरे विश्व को धारण करनेवाले स्वयं परमात्मा ही हैं।

उन विश्व को धारण करनेवाले सर्वात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २३९ –

ॐ विश्वभुजे नमः

विश्व का पालन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Enjoyer of the World.

विश्वं भुक्ते भुनक्ति पालयति इति वा विश्वभुक् अर्थात् विश्व को भक्षण करते अथवा भोगते यानी पालन करते हैं, इसलिए विश्वभुक् हैं। यह विश्व मायाशक्ति के द्वारा निर्मित अर्थात् जड़ है, उसका स्वतः अस्तित्व नहीं होता है। परमात्मा ऐसे जड विश्व को चेतना के द्वारा अनुगृहीत करके उसे टिकाए रखते हैं। अथवा प्रलयकाल में परमात्मा में ही विलीन होने के कारण वे विश्व के भोक्ता कहे जाते हैं। उन विश्व के पालक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २४० -

ॐ विभवे नमः

विविध रूपों में व्यक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Multifarious Forms.

हिरण्यगर्भादि रूपेण विविधं भवति इति विभुः अर्थात् हिरण्यगर्भादि रूप से विविध होते हैं, इसलिए विभु हैं। हिरण्यगर्भ परमात्मा की प्रथम अभिव्यक्ति होती है। उसके उपरान्त यह विविध नामरूपात्मक जगत अभिव्यक्त होता है। अर्थात् परमात्मा स्वयं ही अपनी प्रकृति को धारण करके हिरण्यगर्भ से लेकर इन विविधता पूर्ण जगत की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। अतः वे विभु कहलाते हैं।

उन विभुस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २४१ –

ॐ सत्कर्त्रे नमः

सत्कार करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Admirer of the Rightous.

सत्करोति पूजयति इति सत्कर्ता अर्थात् सत्कार करते अर्थात् पूजते हैं, इसलिए सत्कर्ता हैं। जो लोग धर्ममार्ग का अनुसरण करते हैं, परमात्मा स्वयं उनका सत्कार करते हैं। ऐसे लोगों के पुरुषार्थों की सिद्धि कराने के द्वारा मानों उनकी पूजा करते हैं, इस प्रकार धर्ममार्ग अवलम्बी का शुभ करने की वजह से वे सत्कर्ता कहे जाते हैं।

उन सत्कार करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २४२ -

ॐ सत्कृताय नमः

सत्कृत स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is worshipped even by the worshipped ones.

पूजितैः अपि पूजितः सत्कृतः अर्थात् पूजितों से भी पूजित हैं, इसलिए सत्कृत हैं। जगत में सन्मार्ग गामी, धर्ममार्ग का अनुसरण करनेवाले सन्त पुरुषों तथा ज्ञानीजनों का आदर व सत्कार होता हैं। नारदमुनि, सनतकुमार आदि तथा अन्य अनेकों ऋषिगण, देवतागण जो सन्मार्गी, ज्ञानवान, समस्त विश्व के द्वारा पूजित होते हैं, वे सब ऋषि, देवता आदि भी परमात्मा को ही पूजते हैं। उन सत्कृत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २४३ -

ॐ साधवे नमः

साधु स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Virtous.

न्यायप्रवृत्ततया साधु; साधयति इति। जिनकी प्रवृत्ति न्यायानुकूल होती है, वे साधु हैं। परमात्मा अवतार लेकर स्वयं धर्मानुकुल आचरण करके धर्म के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, इस प्रकार वे धर्म की संस्थापना करते हैं। जो धर्ममार्ग का अनुसरण करता हैं, वह साधु कहा जाता है। अत: परमात्मा साधु कहलाते हैं।

उन साधु स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २४४ -

ॐ जह्नवे नमः

सबका लय करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Annihilates all

जनान् संहारसमये अपह्नुते अपनयति इति जह्नुः अर्थात् संहार के समय जीवों का लय या अपनयन करते हैं, इसलिए जह्नु हैं। परमात्मा अपनी प्रकृति का संवरण करके समस्त जीवों का प्रलय करते हैं। उस समय सब जीव मानों परमात्मा की मायाशक्ति रूपी बीज में विलीन हो जाते हैं। इस प्रकार परमात्मा ही अपने संकल्प से समस्त जीवों का लय करते हैं। अतः वे जह्नु हैं।

सबका लय करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २४५ -

ॐ नारायणाय नमः

नारायण स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Narayana.

नाराणां जीवानां अयनत्वात् प्रलय इति वा नारायणः 'यत्प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति श्रुतेः अर्थात् प्रलयकाल में नार अर्थात् जीवों के अयन होने के कारण नारायण हैं। श्रुति बताती है कि जिसमें सब जीव मरकर प्रविष्ट होते हैं', उन भगवान् का नाम नारायण है। प्रलयकाल में समस्त जीव अव्यक्त परमात्मा में ही लीन हो जाते हैं। इस प्रकार परमात्मा ही समस्त जीवों का परं गन्तव्य है।

उन नारायण स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २४६ –

ॐ नराय नमः

नर स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Guide.

नयति इति नरः प्रोक्तः परमात्मा सनातनः इति व्यासवचनम् अर्थात् 'ले जाता है, इसलिए सनातन परमात्मा नर कहलाता है' भगवान वेदव्यासजी के इस वचनानुसार भगवान नर हैं। भगवान सभी जीवों के कर्म के अनुसार उन्हें कर्मफल प्रदान करते हुए कर्मफल के भोग की ओर ले जाते हैं, इसलिए वे नर हैं।

उन नरस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २४७ -

ॐ असंख्येयाय नमः

असंख्य रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Innumerable Forms.

यस्मिन् संख्या नामरूपभेदादिः न विद्यते इति असंख्येयः अर्थात् संख्या अर्थात् नाम-रूप भेदादि नहीं है, वे भगवान् असंख्येय हैं। यद्यपि परमात्मा से ही असंख्य नामरूप के भेदवाला विविधतापूर्ण जगत उत्पन्न होता है, उन पर ही आश्रित होता है, तथा उन्हींमें विलीन हो जाता है, किन्तु वस्तुतः परमात्मा उन सब से रहित हैं। सब नामरूप परमात्मा पर रस्सी में सांप की तरह आरोपित मात्र है। अतः वे स्वयं असंख्येय हैं।

उन असंख्येय रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २४८ -

ॐ अप्रमेयात्मने नमः

अप्रमेय स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Incomprehensible Self.

अप्रमेय आत्मा स्वरूपम् अस्य इति अप्रमेयात्मा अर्थात् उनकी आत्मा वा स्वरूप अप्रमेय है, इसलिए वे अप्रमेयात्मा हैं। प्रमेय वह होता है, जिसे किसी प्रमाण वा साधन से जाना जा सकता है। ऐसे किसी प्रमाण के द्वारा ज्ञात होनेवाली समस्त प्रमेय वस्तु जडस्वरूप होती हैं। परमात्मा स्वयं चेतनस्वरूप होने से अप्रमेय हैं, उनसे ही सभी प्रमेय वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है, लेकिन उन्हें कोई विषयीकृत नहीं कर सकता है।

उन अप्रमेयस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २४९ -

ॐ विशिष्टाय नमः

विशिष्ट स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Unique.

अतिशेते सर्वमतो विशिष्टः अर्थात् सबसे अतिशय होने से विशिष्ट हैं। सृष्टि में समस्त नामरूप किसी न किसी विशेष गुण और धर्म से युक्त होते है। किन्तु उन सब में एक समानता है कि वे सब उत्पत्ति आदि विकारों से युक्त हैं। परमात्मा उन समस्त उत्पत्ति आदि विकारों से रहित, उन सबसे परे हैं, इस प्रकार परमात्मा अन्य सब से विशिष्ट हैं।

उन विशिष्टस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २५० -

ॐ शिष्टकृते नमः

शासनकर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Governs All.

शिष्टं शासनं तत् करोति इति शिष्टकृत् अर्थात् शिष्ट शासन को कहते हैं, भगवान शासन करते हैं, इसलिए वे शिष्टकृत् हैं। परमात्मा के अधीन प्रकृति से उत्पन्न सृष्टि अपने अपने नियमों की सीमा के अन्तर्गत रहकर कार्य करते हैं, इसलिए सृष्टि का सुन्दर तरीके से संचालन होता है। उन प्रकृति को नियंत्रित करनेवाले स्वयं परमात्मा हैं। इस प्रकार परमात्मा ही जगत का संचालन करने की वजह से शासनकर्ता कहलाते हैं।

उन शासनकर्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २५१ -

ॐ शुचये नमः

शुद्धस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Ever Pure.

निरंजनः शुचिः अर्थात् मलहीन होने से शुचि हैं। जगत का सृजन करनेवाली मायाशक्ति परमात्मा के अधीन रहती है, किन्तु परमात्मा उनसे अप्रभावित हैं, अतः परमात्मा में अज्ञान तथा माया की किसी भी प्रकार की मलिनता नहीं है। वे उसके समस्त विकारादि से अप्रभावित रहकर स्थित हैं। अतः वे शुद्धस्वरूप कहे जाते हैं। जो माया से प्रभावित हो जाते हैं, वे ही अज्ञानादि मल से कलुषित हो जाते हैं।

उन शुद्धस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २५२ –

ॐ सिद्धार्थाय नमः

सिद्ध अर्थवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Accomplished.

सिद्धो निर्वृतः अर्थ्यमानो अर्थो अस्य इति सिद्धार्थः अर्थात् भगवान का इच्छित अर्थ सिद्ध हो गया है, इसलिए वे सिद्धार्थ हैं। प्रत्येक मनुष्य को सबसे पहले अपने लक्ष्य का स्पष्टता से निर्धारण करना चाहिए और तदुपरान्त उसकी सिद्धि हेतु अपना सर्वस्य लगाना चाहिए, तभी वह सिद्धार्थ कहा जाता है। अपने भगवान से हमें यह गुण सीखना चाहिए, क्योंकि वे सिद्धार्थ हैं। सिद्धार्थ ही तृप्तात्मा होता है। उन सिद्ध अर्थवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २५३ -

ॐ सिद्धसंकल्पाय नमः

सिद्धसंकल्प वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Firm Resolve.

सिद्धो निष्पन्नः संकल्पो अस्य इति सिद्धसंकल्पः, सत्यसंकल्पः अर्थात् जो एक बार संकल्प लेने के बाद उसकी पूर्ति तक दृढता से लगे रहते हुए, एवं अनेकानेक अनुकूलता एवं प्रतिकूलताओं से अप्रभावित रहते हुए, उसको पूर्ण कर देते हैं, वे ही सिद्धसंकल्प कहे जाते हैं। ऐसी संकल्प की दृढता एवं परिस्थितियों से अविचिलित रहने वाले प्रभु का प्रत्येक संकल्प सिद्ध होता है।

उन स्पष्टता एवं दृढता के मूर्तिमानस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २५४ -

ॐ सिद्धिदाय नमः

सिद्धि प्रदाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Bestower of Felicity.

सिद्धिं फलं कर्तृभ्यः स्वाधिकारानुरूपतो ददाति इति सिद्धिदः अर्थात् कर्ताओं को उनके अधिकार के अनुसार सिद्धि अर्थात् फल देते हैं, इसलिए वे सिद्धिद हैं। भगवान ही सभी कर्मों के फल को प्रदान करनेवाले हैं। अतः समस्त जीवों को उचित समय पर उनके किए हुए कर्म की सिद्धि अर्थात् फल को प्रदान करते हैं। इसलिए वे सिद्धिद कहे जाते हैं।

उन सिद्धिप्रदाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २५५ -

ॐ सिद्धिसाधनाय नमः

सिद्धसाधन रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Means of Fulfillment.

सिद्धेः क्रियायाः साधकत्वात् सिद्धिसाधनः अर्थात् सिद्धिरूप क्रिया के साधक होने के कारण सिद्धि साधन हैं। परमात्मा के स्वरूप की दृष्टि से वे हमारे साध्य हैं, और उनके दिव्य कर्मो की दृष्टि से वे हम सबको ठीक साधना हेतु मार्गनिर्देशन भी प्रदान करते हैं। परमात्मा हम सबको हमारे जीवन की सफलता हेतु प्रामाणिक साधनों का ज्ञान देते हैं, अतः वे सिद्धिसाधन हैं।

उन सिद्धिसाधन रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २५६ -

ॐ वृषाहिणे नमः

यज्ञस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of the form of Yagna.

वृषो धर्मः पुण्यम्, तदेवाहः प्रकाशसाधर्म्यात्, द्वादशाह प्रभृतिः वृषाहः; सः अस्य अस्ति इति वृषाही अर्थात् वृष, धर्म या पुण्य को कहते हैं, प्रकाशस्वरूपता में समानता होने के कारण वही अहः अर्थात् दिन है। अतः द्वादशाह आदि यज्ञों को वृषाह कहते हैं। वे द्वादश आह आदि यज्ञ भगवान में स्थित हैं। अतः वे वृषाही हैं। जहां पर भी पुण्यकार्य होता है, वहां स्वयं भगवान का वास होता है। अतः भगवान स्वयं ही यज्ञस्वरूप कहे जाते हैं। उन यज्ञस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २५७ –

ॐ वृषभाय नमः

कामनाओं की वर्षा करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Showerer of Grace.

वर्षति एष भक्तेभ्यः कामान् इति वृषभः अर्थात् भक्तों के लिए भगवान कामनाओं की वर्षा करते हैं, इसलिए वे वृषभ हैं। जो भी भगवान के प्रति समर्पित होता है, वह अपने बारे में निश्चिन्त और निस्वार्थ हो जाता है। ऐसे निःस्वार्थ भक्त के द्वारा की गई कामना भी सब के कल्याण हेतु ही होती है। उन समष्टि कल्याण हेतु की गई कामनापूर्ति की भगवान वर्षा करते हैं, इसलिए वे वृषभ कहे जाते हैं।

उन वृषभ रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २५८ –

ॐ विष्णवे नमः

विष्णुरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All-pervading.

विष्णुः 'विष्णु–विक्रमणात्' इति व्यासोक्तेः अर्थात् सब ओर व्याप्त होने के कारण वे विष्णु हैं। परमात्मा समस्त नामरूपात्मक जगत को मोतियों में धागे की तरह व्याप्त करके स्थित हैं। तथा कालातीत होने की वजह से समस्त भूत, भविष्य और वर्तमान काल को भी व्याप्त करते हैं। इसलिए वे सर्वव्यापी विष्णु कहलाते हैं।

उन विष्णुस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २५९ –

ॐ वृषपर्वणे नमः

परंधाम हेतु सोपान रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Ladder to the Ultimate.

वृषपर्वाणि सोपानपर्वाणि आहुः परं धामारुरूक्षोः इति, वृषपर्वा अर्थात् परमधाम में आरूढ़ होने की इच्छावाले के लिए वृष अर्थात् धर्म रूप सोपान, इसलिए भगवान वृषपर्वा हैं। धर्म के आचरण से ही शान्त, सूक्ष्म, संवेदनशील अर्थात् निर्मल अन्तःकरण होता है। ऐसे मन से ही परमात्म विषयक जिज्ञासा का उदय होता है, तथा उसके लिए समर्थ होता है। एवं धर्माचरण परमात्मा की प्राप्ति हेतु प्रथम सोपान होनेकी वजह से वे वृषपर्व कहे जाते हैं। उन वृषपर्व स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २६० –

ॐ वृषोदराय नमः

प्रजा की वर्षा करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Showering Belly.

प्रजा वर्षति इव उदरमस्य इति वृषोदरः अर्थात् भगवान का उदर प्रजा की वर्षा करता है, इसलिए वे वृषोदर हैं। पुराण के द्वारा एक सांकेतिक चित्र प्रस्तुत किया गया है कि ब्रह्माजी की उत्पत्ति भगवान विष्णु के नाभि से उत्पन्न कमल में से हुई हैं। समस्त प्रजा के पिता ब्रह्माजी भगवान विष्णु की नाभि से उत्पन्न होने के कारण ऐसा लगता है कि मानो भगवान के उदरस्थ नाभि से प्रजा की वर्षा हुई हो। अतः भगवान वृषोदर हैं। उन वृषोदर रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २६१ –

ॐ वर्धनाय नमः

वृद्धि करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Nourisher of all.

वर्धयति इति वर्धनः अर्थात् वृद्धि करते हैं, इसलिए वे वर्धन कहलाते हैं। भगवान जगत के पालयिता हैं, अतः ब्रह्माजी के द्वारा उत्पन्न सृष्टि का पालन करने के द्वारा वे ही सब की वृद्धि करते हैं। न केवल स्थूल रूप से, किन्तु धर्म की संस्थापना तथा रक्षा करने के द्वारा सृष्टि में व्यवस्था बनाए रखते हैं। इसकी वजह से जीवों का अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि हेतु विकास होता है। इस अर्थ में भी वे वर्धन हैं।

उन वृद्धि करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २६२ -

ॐ वर्धमानाय नमः

वर्धमान रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Ever-Growing.

प्रपंचरूपेण वर्धते इति वर्धमानः अर्थात् प्रपंचरूप से बढ़ते हैं, इसलिए वर्धमान हैं। परमात्मा स्वयं ही अपनी मायाशक्ति से इस पंचमहाभूत रूप प्रपंच की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। उसके उपरान्त सूक्ष्म प्रपंच से स्थूलीकरण होकर उसमें से विविध नामरूपात्मक जगत प्रस्तुत होता है। इस प्रकार वे इन सूक्ष्म प्रपंच और उसके उपरान्त स्थूल प्रपंच के विलास के रूप में बढ़ते हैं। अतः वे वर्धमान हैं।

उन वर्धमान स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २६३ -

ॐ विविक्ताय नमः

सबसे पृथक रहनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Unaffected.

इत्थं वर्धमानो अपि पृथगेव तिष्ठति इति विविक्तः अर्थात् इस प्रकार बढ़ते हुए भी पृथक् ही रहते हैं, इसलिए विविक्त हैं। परमात्मा स्वयं ही मायाशक्ति से इन नामरूपात्मक प्रपंच की तरह अभिव्यक्त होकर वृद्धि को प्राप्त होते से प्रतीत होते हैं, तथापि उनमें वास्तविक रूप से वृद्धि आदि कुछ भी परिवर्तन नहीं होता है। वे इन सब विकारों से परे हैं। अतः वे विविक्त कहे जाते हैं। उन विविक्त रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २६४ –

ॐ श्रुतिसागराय नमः

श्रुति के सागररूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Repository of all Scriptures.

श्रुतयः सागरः इव अत्र निधीयन्ते इति श्रुतिसागरः अर्थात् समुद्र में जल के समान भगवान् में श्रुतियां स्थित हैं, इसलिए वे श्रुतिसागर हैं। परमात्मा सर्वविद् है, सृष्टि की उत्पत्ति आदि के रहस्यों का तथा समस्त ज्ञान उनमें निहित है। सृष्टि की उत्पत्ति के समय समस्त श्रुति अर्थात् वैदिक मंत्र परमात्मा से ही उनके श्वास की तरह निःसृत हुए है। अतः वास्तविक श्रुति रूप ज्ञान की निधि स्वयं परमात्मा ही होने से वे श्रुतिसागर कहलाते हैं।

उन ज्ञान की निधि रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २६५ -

ॐ सुभुजाय नमः

सुन्दर भुजावाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Graceful Arms.

शोभना भुजा जगद् रक्षाकरा अस्य इति सुभुजः अर्थात् भगवान की जगत की रक्षा करनेवाली भुजाएं अति सुन्दर हैं, इसलिए वे सुभुज कहे जाते हैं। जगत के प्रत्येक पदार्थ प्रकृति के नियमों के अधीन रहकर कार्य करते हैं, इसलिए जगत में एक सुन्दर व्यवस्था बनी हुई है। इसी वजह से जगत सुरक्षित हो रहा है। यह प्रकृति मानो परमात्मा की सक्षम भुजाओं के द्वारा नियंत्रित हो रही है, अतः वे सुभुज हैं।

उन सुन्दर भुजा वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २६६ -

ॐ दुर्धराय नमः

किसी के द्वारा धारण न किए जानेवाले प्रभु को नमन।

I salute the one who is Unfathomable.

पृथिव्यादीनि अपि लोकधारकाणि अन्यैः धारयितु अशक्यानि धारयन् न केनचिद् अपि धारयितुं शक्य इति दुर्धरः जो अन्य से धारण नहीं किये जा सकते, उन पृथ्वी आदि लोकधारक पदार्थों को भी धारण करते हैं, और स्वयं किसीसे धारण नहीं किये जा सकते, इसलिए वे दुर्धर हैं। पृथ्वी समस्त लोकों को धारण करती है। परमात्मा उन पृथ्वी को धारण करते हैं, अत एव सभी लोकों का अस्तित्व बना हुआ हैं।

उन दुर्धर रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २६७ -

ॐ वाग्मिने नमः

वेदमयी वाणी के जनक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Giver of Vedas

यतो निःसृता ब्रह्ममयी वाक् तस्माद् वाग्मी अर्थात् भगवान से वेदमयी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ है, इसलिए वे वाग्मी हैं। परमात्मा सर्वज्ञ हैं, उनमें सभी लौकिक व पारलौकिक विषयों का ज्ञान, भूत, भविष्य आदि सभी काल का ज्ञान निहित है। यह ही ज्ञान जगत की उत्पत्ति के साथ परमात्मा के श्वास की तरह वेदों के अन्तर्गत प्रकट हुआ। ऐसी महान वेदमयी वाणी की महिमा इस ज्ञान की वजह से है। इन वेदमयी वाणी के जनक परमात्मा ही हैं। अतः उन्हें वाग्मी कहा जाता है। उन वेदवाणी के जनक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २६८ –

ॐ महेन्द्राय नमः

देवताओं के ईश्वररूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Indra.

महान् च असौ इन्द्रश्च इति महेन्द्रः, ईश्वराणाम् अपि ईश्वरः अर्थात् महान इन्द्र अर्थात् देवताओं के भी ईश्वर होने के कारण महेन्द्र हैं। इन्द्र आदि देवता बहुत शक्तिशाली होते हैं। उन्हींके अनुग्रह से जगत में अनेकों इन्द्रियां आदि की शक्तियां कार्य करने में सक्षम होती है। किन्तु परमात्मा उनसे भी महान, उनको भी संचालित करनेवाले हैं। अतः वे महेन्द्र हैं।

उन देवताओं के स्वामी रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २६९ -

ॐ वसुदाय नमः

धन देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Giver of Prosperity.

वसु धनं ददाति इति वसुदः वसु अर्थात् धन देते हैं, इसलिए भगवान वसुद हैं। धन वह होता है, जिससे जीव सुरक्षा का अनुभव करता है। प्रत्येक जीव अपनी सुरक्षा विषयक धारणा के अनुरूप संकल्प करके उस दिशा में प्रयास करता है। भगवान स्वयं ही उनके इस प्रयास को फलीभूत करते हुए उन उन धन अर्थात् सुरक्षा के साधन प्रदान करते हैं। इसलिए भगवान वसुद कहे जाते हैं।

उन धन देवेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २७० –

ॐ वसवे नमः

माया से आच्छादित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Indweller.

आच्छादयति आत्मस्वरूपं मायया इति वसुः अर्थात् माया से जिनका स्वरूप ढका हुआ हैं, इसलिए वे वसु हैं। जगत में जो कुछ भी है, वह सब परमात्मा की ही माया के द्वारा अभिव्यक्ति है। अतः कर्मफल को देनेवाले भी वे हैं, और दीया जानेवाला फल रूप धन भी वे ही हैं। परमात्मा हमारी आत्मा की तरह से स्थित होने के बावजूद भी माया के कारण मानो वे ढके हुए से हैं।

उन वसु रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २७१ –

ॐ नैकरूपाय नमः

अनेक रूपवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Infinite Forms.

एकं रूपं अस्य न विद्यते इति नैकरूपः 'इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते इति श्रुतेः। अर्थात् इनका एक ही रूप नहीं होता है, अर्थात अनेक रूप, जिसका भाव है कि जितने भी दुनिया में रूप होते हैं वे सभी एक ईश्वर के होते हैं, अतः वे नैकरूप हैं। परमात्मा स्वयं अरूप हैं, लेकिन वे ही जगत के अभिन्न निमित्त–उपादान कारण होने से सभी रूप धारण करते हैं।

उन अनेक रूप वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २७२ –

ॐ बृहद्रूपाय नमः

महान् रूपवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Universal Form.

बृहन्महद् वराहादिरूपम् अस्य इति बृहद्रूपः अर्थात् भगवान के वराह आदि रूप महान् हैं, इसलिए वे बृहद्रूप हैं। जब जब पृथ्वी पर अधर्म की वृद्धि और धर्म का ह्रास होता है, तब परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति से रूप धारण करके अवतरित होते हैं। धर्म की स्थापना हेतु ही भगवान विविध रूप को धारण करते हैं। ये जगत के कल्याण के लिए होने की वजह से महान है।

उन महान् रूपवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २७३ –

ॐ शिपिविष्टाय नमः

सर्वात्मा रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Self of All.

शिपयः पशवः तेषु विशति तेषु विष्टति इति शिपिविष्टः अर्थात् पशुओं को शिपि कहा जाता है, उनमें जो वास करते हैं वे शिपिविष्ट हैं। ईश्वर सर्वात्मा होने के कारण सभी के अन्दर उनकी आत्मा की तरह से वास करते हैं। पशु ईश्वर के विधान के अनुरूप ही जीते और खाते–पीते हैं, अतः उनमें एक स्वाभाविक ही पवित्रता और सुन्दरता होती है। ऐसी दिव्य अभिव्यक्तियों में जो उनकी आत्मा की तरह से वास करते हैं, उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २७४ -

ॐ प्रकाशनाय नमः

सबको प्रकाशित करने वाले को नमन।

I salute the one who is the Illuminator of All.

सर्वेषां प्रकाशनशीलत्वात् प्रकाशनः अर्थात् सब को प्रकाशित करनेवाले होने के कारण भगवान प्रकाशन हैं। जगत जड़ पदार्थो का समूह है। वह स्वयं अपने आप प्रकाशित नहीं होता है। उन्हें प्रकाशित करने हेतु चेतन प्रकाश की आवश्यकता होती है। यह चेतनस्वरूप प्रकाश स्वयं परमात्मा ही हैं, जो सबको प्रकाशित करते हैं।

उन सर्व प्रकाशक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २७५ -

ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः।

तेज, बल और शौर्य को धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Possessor of Virility, Beauty and Brilliancy.

ओजः प्राणबलम्; तेजः शौर्यादयो गुणाः; द्युतिः दीप्तिः, ताः धारयति इति ओजस्तेजोद्युतिधरः। ओज अर्थात् प्राण और बल, तेज का अभिप्राय शूरवीरता तथा द्युति दीप्ति को कहते हैं, भगवान उन्हें धारण करते हैं, इसलिए वे ओजस्तेजोद्युतिधर कहलाते हैं। परमात्मा स्वयं प्राणधारी जीव को, जीव के भोग व निवास हेतु विद्यमान सृष्टि को धारण करनेवाले बल तथा उनमें जीवन्तता का संचार करनेवाली दीप्ति से युक्त है, इसकी वजह से ही यह जीवों से सभर सृष्टि टिकी हुई है। अतः वे ओजस्तेजोद्युतिधर कहलाते हैं।

उन तेज, बल आदि के धाम परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २७६ –

ॐ प्रकाशात्मने नमः

प्रकाशस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Effulgent Light.

प्रकाशस्वरूप आत्मा यस्य स प्रकाशात्मा अर्थात् जिनकी आत्मा प्रकाशस्वरूप हैं, वे भगवान प्रकाशात्मा कहलाते हैं। प्रकाशस्वरूप वह होता है कि जिसे जानने हेतु अन्य किसी साधन अथवा प्रकाश की अपेक्षा नहीं होती है। जिस प्रकार सूर्य को देखने हेतु हमें किसी अन्य प्रकाश की अपेक्षा नहीं होती है। परमात्मा को जानने के लिए किसी अन्य प्रकाश की वा साधन की आवश्यकता नहीं है, अतः वे प्रकाशस्वरूप कहलाते हैं।

उन प्रकाश स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २७७ –

ॐ प्रतापनाय नमः

विश्व को तप्त करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Enlivener of the World.

सवित्रादिविभूतिभिः विश्वं प्रतापयति इति प्रतापनः अर्थात् सूर्य आदि अपनी विभूतियों से विश्व को तप्त करते हैं, इसलिए प्रतापन हैं। सूर्य, अग्नि, विद्युत आदि दीप्तियां परमात्मा की सुन्दर विभूतियां हैं, जिसकी वजह से समस्त सृष्टि उष्मा को प्राप्त करती है और उससे सृष्टि तप्त होती है। इसी कारण से सृष्टि में सन्तुलन तथा व्यवस्था बनी रहती है।

उन सूर्य आदि रूप से विश्व को तप्त करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २७८ -

ॐ ऋद्धाय नमः

धर्म आदि से समृद्ध परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All-prosperous.

धर्मज्ञानवैराग्य आदिभिः उपेतत्वात् ऋद्धः अर्थात् धर्म, ज्ञान और वैराग्यादि से सम्पन्न होने के कारण ऋद्ध हैं। परमात्मा समग्र - ऐश्वर्य, शौर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छह गुण अर्थात भग से सम्पन्न हैं, अतः उन्हें भगवान कहते हैं। सृष्टि में जहां पर भी उक्त गुण दिखाई देते हैं, वह इन्हीं परमात्मा के गुणों के लेश मात्र है। इस प्रकार वे सब से समृद्ध हैं। उन समस्त गुणों से समृद्ध परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

\- २७९ -

ॐ स्पष्टाक्षराय नमः

ओंकाररूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is himself is "Om"..

स्पष्टम् उदात्तम् ओंकारलक्षणम् अक्षरम् अस्य इति स्पष्टाक्षरः अर्थात् भगवान का ओंकार रूप अक्षर स्पष्ट और उदात्त है, इसलिए वे स्पष्टाक्षर हैं। ॐ परमात्मा का शब्दावतार हैं। सृष्टि की उत्पत्ति के समय सर्व प्रथम परमात्मा 'ॐ' रूप से प्रकट हुए थे। अतः वे स्पष्ट अक्षर ओम् ही है, जिसमें समस्त वांग्मय जगत का समावेश है।

उन ओंकार स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २८० -

ॐ मन्त्राय नमः

मन्त्र स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Sacred Hymns.

ऋग्यजु:सामलक्षणो मन्त्र:; मन्त्रबोध्यत्वात् वा मन्त्र: अर्थात् भगवान साक्षात् ऋक्, साम और यजुरूप मन्त्र हैं, अथवा मन्त्रों से जानने योग्य होने के कारण मन्त्र हैं। सभी वेदों का ज्ञान सृष्टि की उत्पत्ति के समय परमात्मा से ही प्रकट हुआ हैं तथा समस्त अपौरुषेय विषय, जो स्वत: मनुष्य की बुद्धि के द्वारा ज्ञात नहीं होता है, उनके लिए ऋग्वेद आदि शास्त्र ही प्रमाण है। परमात्मा भी अपौरुषेय होने के कारण इन वेदों के मंत्रों के द्वारा ही जाने जाते हैं।

उन मंत्र स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २८१ –

ॐ चन्द्रांशवे नमः

चन्द्रमा की किरणों के समान शीतल परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Soothing Moonlight.

संसारतापतिग्मांशुताप–तापित चेतसां चन्द्रांशुः इव आह्लादकरत्वात् चन्द्रांशुः अर्थात् संसारतापरूप सूर्य के ताप से सन्तप्त चित्त वाले पुरुषों को चन्द्रमा की किरणों के समान आह्लादित करनेवाले हैं, इसलिए चन्द्रांशु हैं। जीव अपने अज्ञान और मोह के कारण त्रिविध तापों से सतत सन्तप्त होता रहता है। ऐसे में प्रभु के प्रति शरणागति इन तापों में चन्द्रमा के समान शीतलता प्रदान करती है। अतः वे चन्द्रांशु कहे जाते हैं। उन चन्द्रांशु सम परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २८२ –

ॐ भास्करद्युतये नमः

सूर्य के तेज के समान परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Resplendent like the Sun.

भास्करद्युतिसाधर्म्याद् भास्करद्युतिः सूर्य के तेज के समान धर्मवाले होने के कारण भास्करद्युति हैं। सूर्य समस्त सौरमण्डल का केन्द्र हैं, वह ही उर्जा का पूंज हैं। सभी को दूर रहकर जीवन और शक्ति प्रदान कर अनुगृहीत करते रहते हैं। उसी प्रकार परमात्मा भी अपनी चेतनस्वरूपता से सभी जीवों को सतत अनुगृहीत करते रहते हैं। इस प्रकार परमात्मा सूर्य के समान तेजस्वी और सभी को आशीर्वाद-प्रदान करते रहते हैं।

उन सूर्यवत् तेजस्वी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २८३ -

ॐ भास्करद्युतये नमः

सूर्य के तेज के समान परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Respledent like the Sun.

भास्करद्युतिसाधर्म्याद् भास्करद्युतिः सूर्य के तेज के समान धर्मवाले होने के कारण भास्करद्युति हैं। सूर्य समस्त सौरमण्डल का केन्द्र हैं, वह ही उर्जा का पूंज हैं। सभी को दूर रहकर जीवन और शक्ति प्रदान कर अनुगृहीत करते रहते हैं। उसी प्रकार परमात्मा भी अपनी चेतनस्वरूपता से सभी जीवों को सतत अनुगृहीत करते रहते हैं। इस प्रकार परमात्मा सूर्य के समान तेजस्वी और सभी को आशीर्वाद-प्रदान करते रहते हैं।

उन सूर्यवत् तेजस्वी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २८४ –

ॐ भानवे नमः

प्रकाशित होनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Self-effulgent.

भाति इति भानुः 'तमेव भान्तमनुभाति सर्वम्' इति श्रुतेः अर्थत् भासित होने के कारण भानु हैं। श्रुति भी बताती है कि – 'उसीके भासित होने पर सब प्रकाशित होते हैं।' परमात्मा चेतनस्वरूप, स्वयं प्रकाशस्वरूप हैं, तथा समस्त जगत जड़रूप है। ऐसा जड़ जगत परमात्मा से ही सत्ता–स्फूर्ति प्राप्त करके भासित होता है, अतः परमात्मा भानुस्वरूप है।

उन भानु स्वरूप सर्व प्रकाशक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २८५ –

ॐ शशबिन्दवे नमः।

चन्द्रमा स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is like the Moon.

शश इव बिन्दुः लांछनम् अस्य इति शशबिन्दुः चन्द्रः तद्वत् प्रजाः पुष्णाति इति शशबिन्दुः। 'पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः इति भगवद् वचनात् अर्थात् खरगोश के समान जिसमें चिह्न है, उस चन्द्रमा का नाम शशबिन्दु हैं। भगवान का वचन है – 'मैं रसस्वरूप चन्द्रमा होकर सब औषधियों का पोषण करता हूं।' परमात्मा स्वयं ही चन्द्रमा की तरह प्रकट होकर अपनी किरणों के माध्यम से अमृत की वर्षा करते हैं, जिसकी वजह से वनस्पति तथा औषधि पोषित होती है। इसे भक्षण करने के द्वारा जीवों का पोषण होता है। उन चन्द्रमा के रूप में जीवों को पोषित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २८६ -

ॐ सुरेश्वराय नमः

देवताओं के स्वामी को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of all Deities.

सुराणां देवानां शोभनदातृणां च ईश्वरः सुरेश्वरः अर्थात् देवताओं और शुभदाताओं के ईश्वर होने के कारण सुरेश्वर हैं। समस्त देवता पुण्यात्मा होते हैं तथा वे प्रभु के निमित्त बनकर सृष्टि की व्यवस्था बनाए रखने हेतु अपना योगदान देते हैं। जो धर्ममार्ग का अनुसरण करता है, उन्हें वे शुभगति प्रदान करते हैं। ऐसे देवतागण स्वयं स्वतंत्र नहीं हैं, किन्तु वे परमात्मा के अधीन होकर ही कार्य करते हैं। अतः परमात्मा सुरेश्वर कहलाते हैं।

उन देवताओं के स्वामी को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २८७ -

ॐ औषधाय नमः

औषधि रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Divine Medicine.

संसाररोग भेषजत्वात् औषधम् अर्थात् संसाररोग के औषध हैं। जीव अज्ञान के कारण अपने वास्तविक स्वरूप परमात्मा को नहीं जानता है, अतः विपरीत धारणा से युक्त होकर, अपने आपको संकुचित, जन्मादिवान मानकर सतत संसार के चक्र में आवागमन करता है। इस प्रकार संसाररोग से पीडित जीव तब तक इससे मुक्त नहीं हो पाता; जब तक अपने स्वस्वरूप परमात्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं करता है। इस प्रकार संसार से मुक्ति हेतु परमात्मा को अपने आत्मा की तरह प्राप्त करना अर्थात् जानना ही एक मात्र औषधि है।

उन औषधि रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २८८ -

ॐ जगतः सेतवे नमः

संसार से परे जाने हेतु सेतुरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the bridge to Liberation.

जगतां समुत्तारणहेतुत्वात् सेतुः अर्थात् संसार को पार करने के हेतु होने से जगत-सेतु कहलाते हैं। परमात्मा की मायाशक्ति अत्यन्त बलवती है। भगवान स्वयं गीता में बताते हैं कि 'मम माया दुरत्यया' हमारी माया से परे जाना अत्यन्त कठिन है। किन्तु जो परमात्मा की शरण में जाता है वह ही माया से परे अर्थात् संसारसागर को पार कर जाता है। इस प्रकार वे स्वयं संसार से परे जाने हेतु सेतुरूप हैं।

उन संसार से परे जाने हेतु सेतुरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २८९ –

ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः

सत्य धर्म और पराक्रम से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is an embodiment of Truth & Rightousness.

सत्या अवितथा धर्मा ज्ञानादयो गुणाः पराक्रमश्च यस्य स सत्यधर्मपराक्रमः अर्थात् जिनके धर्म–ज्ञानादि गुण और पराक्रम सत्य हैं, वे भगवान सत्यधर्मपराक्रम हैं। भगवान् धर्म, ज्ञान, वैराग्य आदि भग से युक्त हैं तथा जगत की अधर्म से रक्षा करने हेतु पराक्रमी हैं। भगवान के इन गुणों की न उत्पत्ति होती है, न नाश होता है, किन्तु सदैव उनमें विद्यमान रहते हैं। उन सत्य, धर्म और पराक्रम से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २९० -

ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः

तीनों कालों के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Past, Present & Future.

भूतभव्यभवतां भूतग्रामाणां नाथः, तेषां ईष्टे शास्तीति भूतभव्यभवन्नाथः अर्थात् जो भूत, भविष्य और वर्तमान के स्वामी हैं, इन तीनों का जो शासन करते हैं वे भूतभव्यभवन्नाथ हैं। काल की उत्पत्ति परमात्मा से ही हुई है, अतः परमात्मा स्वयं काल से परे हैं। सब काल उनसे उत्पन्न होकर उनमें ही समा जाता है अतः वे काल के शासक हैं।

उन त्रिकाल के स्वामी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २९१ –

ॐ पवनाय नमः

पवित्र करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Purifying Air.

पवतः इति पवनः, पवनः पवतामस्ति इति भगवद् वचनात् अर्थात् पवित्र करते हैं, इसलिए पवन हैं; भगवान का वचन है – पवित्र करनेवाला मैं पवन हूं। पर्यावरण को दूषित वायु तथा अन्य अशुद्धिओं से शुद्ध करने का हेतु पवन ही है। वातावरण में स्थित मलिनताओं से वह ही शुद्ध रखता है, जिसकी वजह से सभी जीव सांस ले पाते है और जीवित रहते हैं। ऐसा दिव्य कार्य, सबको पावन करनेवाले पवनरूप से परमात्मा ही स्थित हैं।

उन पवित्र करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २९२ –

ॐ पावनाय नमः

जगत को गतिमान रखनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who keeps all in go.

पावयति इति पावनः। भीषास्माद्वातः पवते इति श्रुतेः अर्थात् जो सबको गतिमान रखते हैं इसलिए पावन हैं। श्रुति बताती है कि इनके भय से वायु चलता है। जगत के सभी पदार्थ अपनी अपनी प्रकृति के अनुरूप कार्य करते है तथा अनुशासन में रहते है। जैसे वायु बहती है, सूर्य उदित होता है इत्यादि। इसके कारण ही जगत का संचालन तथा सुन्दर व्यवस्था होती है। जगत में व्यवस्था और संचालन करनेवाले स्वयं परमात्मा ही हैं।

उन सबके संचालक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २९३ -

ॐ अनलाय नमः

असीम स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is immeasurable.

न अलं पर्याप्तं अस्य विद्यते इति अनलः अर्थात् भगवान् का अलं अर्थात् पर्याप्तभाव अथवा अन्त नहीं है, इसलिए वे अनल हैं। परमात्मा देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे हैं। उनका न आदि है और न अन्त है। ऐसे परमात्मा को किसी भी दृष्टिकोण से 'वे इतने ही हैं' इस प्रकार अलं नहीं कहा जा सकता है।

उन अनल स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २९४ -

ॐ कामघ्ने नमः

कामना को हरनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Destroyer of all Desires.

कामान् हन्ति मुमुक्षूणां भक्तानां च इति कामहा अर्थात् मोक्षकामी तथा भक्तजनों की कामनाओं को नष्ट कर देते हैं, इसलिए वे कामहा हैं। संसार के बन्धनों से मुक्ति का इच्छुक जब परमात्मा की शरण में जाता है, तब परमात्मा ही गुरु के रूप में अवतरित होकर आत्मा का ज्ञान प्रदान करते हैं। इस ज्ञान को पाकर वह समस्त इच्छाओं से मुक्त हो जाता हैं। इस प्रकार वे कामनाओं को समाप्त करते हैं।

उन समस्त कामनाओं से मुक्ति देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २९५ -

ॐ कामकृते नमः

कामना की पूर्ति करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Fulfiler of the Desires.

सात्विकानां कामान् करोति इति कामकृत्; अर्थात् सात्विक भक्तों की कामनाओं को पूरा करते हैं, इसलिए वे कामकृत् हैं। सात्विक भक्तों की अधर्म से रहित कामना पूर्ति करते हैं। अतः ऐसे भक्तों की कामना लोकहित को ध्यान में रखकर परमात्मा ही पूरी करते हैं। तथा भगवान के श्रीकृष्ण के रूप में अवतार के समय कामदेव स्वयं उनके पुत्र प्रद्युम्न के रूप में जन्मे थे, अतः काम के जनक होने से वे कामकृत् हैं।

उन कामकृत् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २९६ -

ॐ कान्ताय नमः

अत्यन्त रूपवान परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Absolute Auspicious.

अभिरूपतमः कान्तः अर्थात् अत्यन्त रूपवान है, इसलिए कान्त हैं। जगत में जहां पर भी सुन्दर गुण, प्रेम, निःस्वार्थता और उदारता होती है, वहीं पर सुन्दरता अनुभव में आती है। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप होने की वजह से वहां समस्त गुण पूर्ण मात्रा में प्रकट है, आनन्द ही प्रेम और करुणा की तरह से अभिव्यक्त होता है। अतः वे अत्यन्त कान्ति से युक्त अर्थात् सुन्दर हैं।

उन अत्यन्त सुन्दर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २९७ -

ॐ कामाय नमः

कामना रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Most Beloved.

काम्यते पुरुषार्थ अभिकांक्षिभिः इति कामः अर्थात् पुरुषार्थ की आकांक्षावालों से कामना किये जाते हैं, इसलिए काम हैं। मनुष्य अपने जीवन में विविध कामना से युक्त होकर उन-उनकी सिद्धि हेतु पुरुषार्थ करता है। उपर से उन सब में विविधता दिखाई देती है, किन्तु वस्तुतः उन सबकी गहराई में असीम आनन्द को प्राप्त करने की ही एक मात्र कामना होती है। इस प्रकार जाने-अन्जाने वह परमात्मा की ही कामना करता है, क्योंकि परमात्मा ही असीम आनन्दस्वरूप हैं। उन मूलभूत काम्यरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २९८ –

ॐ कामप्रदाय नमः

कामना पूर्ति करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Bestower of Desires.

भक्तेभ्यः कामान् प्रकर्षेण ददाति इति कामप्रदः अर्थात् भक्तों को उत्कृष्ट कामना के अनुरूप वस्तुएं देते हैं, अतः वे कामप्रद हैं। सच्चे हृदय से तथा समग्रता से किया हुआ संकल्प परमात्मा अवश्य पूरा करते हैं। उसमें भी भक्त के द्वारा किया हुआ संकल्प भक्ति की प्राप्ति हेतु तथा स्वार्थरहित होने की वजह से प्रभु अवश्य पूरा करते हैं। अतः वे कामप्रद कहलाते हैं।

उन कामप्रद परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २९९ -

ॐ प्रभवे नमः

प्रभु को नमस्कार।

I salute the one who is the Supreme Lord.

प्रकर्षेण भवनात् प्रभुः अर्थात् अच्छी तरह से उत्पन्न होते हैं, इसलिए वे प्रभु कहलाते हैं। परमात्मा ही अपनी मायाशक्ति से समस्त नामरूपात्मक जगत की तरह से उत्पन्न हुए हैं। जिस प्रकार जल तत्त्व असंख्य लहरों तथा समुद्र के रूप में होता है; ठीक उसी तरह। अर्थात् सब कुछ उत्पन्न हुआ सा प्रतीत होता है, तथापि परमात्मा में किसी भी प्रकार की विकृति नहीं आती है। अतः वे प्रभु कहलाते हैं। उन अच्छी तरह से प्रकट परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०० -

ॐ युगादिकृते नमः

युगादि कालभेद के कर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Creator of Yugas.

युगादेः कालभेदस्य कर्तृत्वाद् युगादिकृत् युगानादिं आरम्भं करोति इति वा अर्थात् युगादि कालभेद के कर्ता होने के कारण युगादिकृत् हैं अथवा युगादि का आरम्भ करते हैं, इसलिए वे युगादिकृत् हैं। परमात्मा की मायाशक्ति से ही उत्पन्न देशादि में काल के चार युग की तरह से भेद किए जाते हैं। यह चारों युग का विभाजन परमात्मा के द्वारा ही किया गया है। सभी युग के वे ही आरम्भकर्ता हैं, क्योंकि वे ही काल के जनक हैं।

उन युगादि के जनक परमात्मा को सादर नमन।